गो नागरी प्रेम प्रकाश

दूसरा भाग

छेदालाल महताकृत

भूमिका

मैं अंतःकरण से धन्यवाद श्रीयुत लाला भगवानदास मेनेजर भारती बिलास आगरे को देता हूं कि जिन्हों ने इस पुस्तक के छापने में बड़ी ही सहायता दी जो इस क्षुद्र पुरुष की क्षुद्र पुस्तक को दिलोजाँ से सुन्दर और साफ़ २ छापने के वास्ते सेवक पर कृपा की वास्तव में लाला साहिब का ध्यान रात दिन देव नागरी और देश की उन्नति ही पर रहता है धन्य है ऐसे सज्जन पुरुषों को ✣

आर्य्या वर्त्त निवासी महाशयों पर विदित है कि प्राचीन समय में यह भारखण्ड भूमि विद्या, बुद्धि, बल, पराक्रम और श्रेष्ठता में सर्व भूमण्डल में प्रसिद्ध थी यह देश ऐसा अनूपम और इस के निवासी सर्व प्रकार की विद्या, नीति, धर्म और तत्व ज्ञान शास्त्र में ऐसे अद्वितीय

य रहे कि कभी किसी प्रदेश में वैसे न हुये कुछ थोड़ीसी जो नाम मात्र रह गई है उस से बोध होता है कि संस्कृत विद्या अमृत रस (सनी) संस्कृत मिली मनोरम भाषा इस देश की ऐसी अनूपम रही जिसे सुन कर देवता लो ग चकृत होते थे यहाँ जैसी साधारण बोल चाल थी वैसी कहीं की काव्य रचना न हुई । पर कालकराल की विचित्र गति से यह देश अब ऐसा ऊजड़ कर बन मानुषों से भर गया है कि एक एक की बात न सुनता न समझता न अपने आत्मीय बन्धु वर्ग की प्रतीत करता न उन से सत्य सनेह रखता है कि अपने बड़ों की शुद्ध रीत का बरताव और बुद्धि वा पराक्रम का प्रचार परस्पर (आपसमें) स्वदेशियों से भूल गये इस का कारण मात्र भाषा का अप्रचार है देखो जिन देशों की उन्नति हुई है वह प्रथम मात्र भाषा द्वारा ही हुई है ॥ जैसे बंगाल, गुजरात, दक्षिण, लंडन आदि हमारे भारत खंड में मूर्खता के कारण यह बड़ा ही अन्धेर हो रहा है कि स्त्री और मनुष्य लोग अपने २ बालकों को जब कि वे छः मास के होते हैं जभी से यह अच्छी तालीम मिलती है कि लला पानी से कहो पप्पा, रोटी

से कहो अट्टा वर्षों में यह वात सीख पाते हैं जव दो तीन वर्ष के वालक हुए तव उन को पप्पा को पानी (वा जल) अट्टा को रोटी कहलवाते हैं तव वालक वड़े ही चकृत होते हैं कि अभी दो तीन वर्ष में यह वोली सीख पाई फिर उसी को सीखना पड़ा यह वड़ी अज्ञानता की वात देशीय लोगों में पाई जाती अन्य लोगों में यह वात कहीं नहीं पाई जाती ॥

हे महाशय जहां तक हो तन मन धन से अपनी मातृ भाषा देवनागरी की उन्नति कीजिये इस विन सव मसाला फीका है। आज कल जो इश्क भरी किताबें जैसे इन्द्र सभा, लैले मजनू, मसनवीयों के प्रचार से वालक और स्त्रियों की वड़ी ही हानि होरही है और प्रति दिन होती जाती है इस विचार से यह पुस्तक रची कि जिससे देशी भाषा का प्रचार हो और हमारे रेलवे वावुओं को ठीक ज्ञान होजावे कि यथार्थ में उर्दू वीवी के प्रचार से देश का नाश हुआ जाता है जो कि उर्दू वीवी का ही दम भरते हैं, देवनागरी भाषा के उत्साहियों और देव नागरी पढ़ी लिखी स्त्रियों को यह पुस्तक विना मूल्य दीजावेगी परन्तु

डाक व्यय ऽ।। भेजना पडेगा ॥

मातृ भाषा का एक शुभचिंतक

छेदालाल महता किलर्क सी, एण्ड ए, रेल

कायमगंज स्टेशन

(ज़िलह फर्रुख़ाबाद) मारफ़त श्रीसीताराम, हीरामनमहता

ओ३म

सदा शान्त रूपं गुणपति नरेशं मन रिपुम्॥
सुधर्मो छा नूपं यतिवर महान्त स्ववपुषा॥
प्रवाहे विद्याया विलसति सदा स्वात्म मनसाम्॥
दयानन्द ध्याये सकल भुवि पाखंड हननम् १॥

दोहा

प्रथम ध्यान जगदीश धर है व्यापक संसार
ब्रम्हा विष्णु महेस को प्रानन उर आधार

चौपाई

श्री गुरु दयानन्द जग माहीं। विदित वशिष्ठ व्यास की नाहीं
छाइ रही महिमा चहुं ओरा। पोपन हृदय दुःख अति घोरा
भरत देश जरमन अमरीका। यूरोप आदि और अफ़रीका
अहो सुफल भारत के भागा। वेद प्रकाश भये सब त्यागा
पोप कुलाहल कियो जग माहीं। भये प्रगट धूरत सब ठांहीं
अहो भाग्य शुभ धर्म हमारा। सब मिल ईश ध्यान अधारा
देश दशा उन्नति के कारण। दीन अनाथन के दुख हारण
मम प्रिय बंधु परम हितकारी। दीन दया निधि सत्य विचारी

सम्मति बिन उन्नति की हानी। सुमति २ करो लाख बखानी
यही रोक उन्नति की भारी। सुमति हीन नन छीनदुखारी
दीनन दुख नाशो प्रिय भ्राता। छाड़ो मत मतान्ध को नाता।
बाल विवाह सन्तान जो करई। त्रियते पित्र नरक सो परई
विद्याहीन करें उपदेशा। धरि २ रूप कुरूप कुभेषा।
जन्म पाय शुभ करें जो काजा। उन समान नहीं दूजो राजा।
शिल्प कृषी का करो प्रचारा। गऊ आदि रक्षा उपकारा।।
तासे सकल जगत में भाई। कीने आदि बड़े प्रभुताई।।
सच्चिदानन्द ध्यान उर लाई। कर नित्र छेदालाल उपाई

दोहा

आर् एम आर् समाज[१] का मास सितम्बर जान
अठारे सो आसी दूसरी रविवार दिन जान
तामें सब मिल आय के मित्र करें व्याख्यान।
सभा नियत सम्बत् मिती सुनो सुजन धरि ध्यान

---

(१) अब यह समाज स्थान नाना पर नहीं है +

श्री १०८ महाराजाधिराज श्री महाराणा सज्जन सिंह देव बहादुर जी० पी० सी० एस० आई० के देवलोक प्राप्त होने से शोकातुर हो यह गोनिराशा देशोपकारी महाशयों की यादगार में बनाई ॥

चौपाई

सुनो २ प्रिय देश हितैषी। पड़ी विपत हम परहै कैसी
गोउन हित रघुवंश कुमारा। राम कृष्ण भये जग अवतारा
हमरे कारण भये बन माली। लीन लुकट अरु कामर काली
बन २ डोलत गायें चराई। महा कष्ट भोगे हम ताईं ॥
दुष्ट असुर दल कीनो छारा। हम हित एक किये प्रचारा
तासे हमें हने ना कोई। दुग्ध हमार पिये सुख होई
तिन गुण हमरी कीन परीक्षा। सर्वस परोपकारी दीक्षा ॥
देव ऋषिन जो उन्नति कीनी। सो कलयुग भक्षण कर लीनी
तासे दुखित सकल संसारा। करें हाय हा विपति अपारा
राजा प्रजा कीन अति आदर। नित्त अब होत हमार निरादर
या अवसर विपता अति भारी। पहुंचाओ कोऊ राजद्वारी ॥
डूबत नौका करो उधारा। घोर नरक दुख सागर पारा
कीर्त्ति जग पर लोक भलाई। पावें सुख अति दुःख मिटजाई
हमरे ऋषी नथे मति मन्दा। जो तिन कीनो हित अनन्दा ॥

कहाँ लग वर्णन होय बड़ाई । जिन महिमा चहुं दिस जग छाई
वापी कूप और बन सुन्दर । रक्षा हेतु रचे अति सुन्दर
श्री जै नगर रामसिंह राजा । कीने हम हित बहुत सुकाजा
सोऊ नृप सुर पुर लोक सिधारे। ईश्वर बिन को हम उबारे
दयानन्द कीनो उपकारा । तासे आदर भयो अपारा +
तन मन धन कीनो सब छारा। गो करुणा निधि ग्रंथ प्रचारा
जासे रक्षा हो जग माहीं । तासे सकल दुःख मिट जांही
चहुं दिस वेद भाष्य प्रचारे । नाशे सकल कष्ट संसारे
बेगहिं सुरपुर वेहू सिधारे। जो जग प्रिय कीन उपकारे
श्री नृप उदय पूर मन रंजन । सज्जन सिंह दीन दुख भंजन
भारत मुकट शिरोमणि भूपा। हा २ वीर अनूप अनूपा
हर्षचन्द्र अति कोमल बानी। हिन्दी रतन जतन जनु खानी
कीनो आदर बहुत सुभाषा । छपवा पत्र कीन प्रकाशा
भारत भाग्य मन्द अति हीना। बेगहिं सुरपुर जो चल दीना
एक खोट है हम में भारी । काहू को कछु नाहि बिगारी
ताही से का दूनें कसाई । स्वार्थ वश ध्यान न लाई
पुत्र अरु कऊ और गऊ पुकारा। सुनो लाट यह विनय हमारी
तुम बिन को प्रभु दुःख न सहया। कौन सुने और हरिहै दइया
सज्जन सुनो प्रीत उर लाई । करो बेग गऊ हेतु उपाई

थर २ कम्पत गऊ अकुलानीं। शीघ्र करो उन्नति समझानीं
घर २ करो नगर गोशाला। जो करिहैं हमरी प्रतिपाला
धन्य २ जगमें जस पैहैं। तिहू पुर लोक सुमंगल ह्वै हैं
गऊ रक्षा कर करो बिचारा। खेती वनिज और व्योपारा
विद्या हीन भये भूपाला। तवहीं से नित हाल विहाला
मुख्य धर्म है रक्षा जिनका। सो नित करें रहस संग गनका
धर्म्म नष्ट हो गये सब ठाईं। जबते मूर्खता जग छाईं।
राजा प्रजा और गोस्वामी। दुःख और भय देखो स्वामी
गये वीत जुग कीन न ध्याना। आर्य्यावर्त्त भयो अति अज्ञाना
भारत वीच मूढ़ मति मन्दा। जो निज करें हमारी निन्दा
मूर्ख ब्राह्मण और अहीरा। करि अभिमान हरें कस पीरा
रक्षक स्वामी सोई कसाई। चोरी करदें हमें कटाई ॥
जहां तहां जाल करें प्रचारी। धरि वहु रूप स्वरूप पुजारी
बाधक लोक धरें निठुराई। गुप्तचोर देखे हम जाई ॥
टीका तिलक पहिर जिन्नारा। पोथी वगल जराली काढा
धोती लम्बी देखि देहाती। हैं पंडित कोऊ जन विख्याती
जान धर्म्म पुनि आदर कीना। निश्चय पाप करेंगे छीना
यह जिये जान करो वहु आदर। दान दक्षिणा सहित सुआदर
तन मन धन से गये लुभाई। गऊ आदि दे विदा कराई

यह तो कथा रही यहँ ठाई । आगे कहूं और कछु गाई ॥
यासे निश्चय करूं प्रकाशा । तासे उन्नति की हो आशा ॥
जिन २ ग्रामण पशू अनेका । तिन २ ग्राम कीन प्रवेशा
कोऊ बने बैरागी सन्यासी । चेला संग लीन छः साती ॥
जहां तहां जाय कीन छलबाला । तासे दुखिन दुखी अति ताता
हमरे स्वामी पशू समाना । देवें कसाइन जिन्हें न ज्ञाना
रक्षा सेवा जो नित करई । सो उन्नति जानत नहीं करई
विद्या पढ़ २ करो सहाई । ज्ञान धर्म्म लो हमें बचाई
चारों ओर करो उपदेशा । हरो पीर गम्भीर कलेशा
ग्राम एक जन कथा सुनाई । सुनो मित्र चित्त उर लाई

दोहा

सुना सखाइक विप्र को करी जाय गोदान
जान बूझ के तुरतही दई कसाई आन

चौपाई

पूछी लोगन जब यह वाता । बोले मधुर बचन इक साथा
सुन यजमान जान यह धर्म्मा । हम हैं विप्र करें नित कर्मा
है अधिकार हमें जो करई । बात अकारथ सुनो न कहई
खेती वनिज और ब्योपारा । जो है सो यह ही सुन सारा
जो जब गाय दान में पाई । चार पाँच दिन रखी जब आई

भई एक जभै दो चारा । वेंच बौंच नित्त करें गुज़ारा
यह व्योपार रचे करतारा । तामें भूंट नाहिं इक बारा
ग्राम २ जो गुरू कहाई । हिन्दू जान ठगें सब ठाई +
मूर्ख गुरु कहें अस बोला । ज्ञान यवन नहीं देवो मोला
हम हैं विप्र सभै विश्वासा । पशु वेंच नहीं करें प्रकाशा
कृषिन सुनाय ठीक की बाता । बाधक घर गये रातहिं राता
बदल रूप बन गये कुरानी । बोले जाय मधुर अति बानी
सौ दो सौ मुद्रा तुम देवो । व्योपार हेत पशू जो लेवो
स्वार्थ साधक बाधक भाई । पशुन सदाँ चोरी कर खाई

दोहा

सुन के कसाइन वाले यह किये बहुत सन्मान
आओ विप्र जी आजिये धन लेवो नित आन

चौपाई

मूर्ख सत्री सुनो अहीरा । जोगी जंगम और फ़कीरा
चोरी करें पशुन की भाई । सन्मुख जाय देयें कट वाई
टरें न घर से दुष्ट कसाई । करो जुदा सिर जब हम जाई
तासें रहे न कछु पहिचाना । पुलिस कभू कर सके न ज्ञाना
यवन फ़कीर करें जो फेरी । देवें भेद कसाई न हेरी ॐ
जब यह खबर देहातिन पाई । मन बेचो पशू जान कसाई

जब कोई पशु होयबेकामा। बन बाओ उनके हित धामा
ताभें रक्षा करो अपारा। यवनादिको करो न सारा
जब यह खबर कसाई न पाई। बंजारे बन घर २ जाई
लेले पुष्ट पशू बलवाना। जुत हल संग जायें मनमाना
तिस पर रुष्ट पुष्टि सजि गोई। ग्राम २ डोलत ठग सोई
गद् २ भये सबदेखि किसाना। हर्ष २ जिये अति सुखमाना
बंजारे के गये पुनि आगे। मोल तोल सब पूछन लागे

दोहा

बंजारे ने कही तब पशू न बेचें दाम
बकरा बकरी गऊ से बदला करें मुदाम

हे ग्राम निवासियो हम पशू मूल्य नहीं देते यदि तुम को जो पशु लेने हों उन्हें पसंद कर लो उन के बदले जो तुम्हारे यहां पुराने वा नये जो खेत के काम में नहीं आते हैं जैसे गाय भैंस, बकरी आदि ग्राम निवासी बेचारे ज़रूरत पर एक २ के बदले तीन २ चार २ पशू भर ने (बदले) में देते हैं जिस से कसाईयों को चौगुना लाभ होता है वे बेचारे किसान तो लियाही चाहें मसल है कि "ज़रूरत पर गधा बाप करते हैं" दूसरे सर्कारी भय जो उगा ही

चूकी तो वाल बच्चे सव ही पुलिस की कार रवाई से नीलाम पर चढ़ा दिये जायेंगे फिर यह नसूझे गा कि यह वेचारे कैसे जियेंगे ग्राम वालों के पास पशु न्यून होने के कारण और छाछि आदि न मिलने के कारण शीघ्र वीमार पड़ २ कर मरजाते हैं पहिले जो देहातों में वीमारी नाम मात्र को न होती थी सो अव ग्राम के ग्राम पर पट होजाते हैं सो जंगल और महोपकारी पशु न होने का कारण है वहुधा परीक्षा करने से ज्ञात हुआ कि यह लोग बहुत करके छाछ ही खाते हैं और रत्न पदार्थ दूध घी वाज़ार में वेच लेते हैं जिस से नगर निवासियों को भी बड़ा ही लाभ पहुंचता है और घी की वचत से कृषी लोग अपनी सन्तान का पालन करते हैं इन लोगों के वीमार होने का यह भी कारण है कि जिस समय कृषी लोग धूप में काम करते हैं और जब पियास लगी तव दो तीन लोटे पानी के ख़ाली पेट सहज में चढ़ा जाते हैं (पीजाते हैं) और बहुतेरे तो पीते ही लोट पोट हो जाते हैं और जिन के यहां गाय भैंस आदि पशु होते हैं

वे भोर होते ही वा पहर भर दिन चढ़े पर दुग्ध वा छा
छ पी लेने के कारण दिन भर तरावट उन के शरीर में
बनी रहती है और भूख पियास भी कम लगती है इ
सी कारण आर्य्यों के राज समय दूध घी पानी के सम
न सस्ता विकता था और बहुधा ग्रामों में तो वेचते ही न
थे केवल परोपकार के वास्ते मांगने वाले को सेंत (मुफ्त)
ही देदेते थे ॥ बड़े शोक की बात है कि स्वार्थी सर्कारी कर्म
चारी ब्योहारी अत्याचारी इन महोपकारी किसानों और
पशुओं को महा कष्ट देते हैं जिस के लिखने से कलेजा
थर २ कांपता है ॥ बस ज्ञानवान इसी में समझ लेंगे ॥

जगधर की कथा

आज काल वहुत से लोग जैसे कि ऊपर वृत्तान्त क
ह आये हैं नीच लोग गंगा आदि के उत्सवों में लड्डू पेड़े
खाने के वास्ते एक सूत का तागा डाल कर ब्राह्मण बने
जाते पर भी यह पद न मिलते थे सो वर्तमान समय में रू
प बदलने से छिण मात्र ही में ब्राह्मण होजाते हैं सो यह
बात ठीक नहीं है इस से सिद्ध होता है कि कर्म ही से मनु
ष्य बड़ा कहाता है ॥ एक ग्राम की कथा जो कि अपने चा

वृधिसेन से सुनी उसका संक्षेप वृत्तान्त ✣

दोहा

वृद्ध अवस्था समय में बाधक कियो विचार
एक नारि धोबिन सहित मन में कीन विचार

चौपाई

बालक युवा अवस्था बीती । वृद्ध शरीर नहीं परतीती ✣
होय न परिश्रम यह जियेजाना । तिसपर निपट मूर्ख अज्ञाना
हुई है तेर बुढ़ापा कैसे । नलफत मीन हीन जल जैसे ✣
मन में तरक कीन वहु वारा । विप्र रूप धरि करो गुजारा ✣
यह सब रूप करें विश्वासा । या विन ओर न दूजी आशा ✣
बन महाराज काज यह कीना । नगर छांडि ग्राम पगु दीना ✣
तहाँ जाय कीनी छल बाता । बन के सिद्धि रहे तहाँ ताता ✣
ग्रामिण लोग जान विख्याती । करी जाय पुनि पूजा पाती ✣
बिना विप्र है ग्राम अशुद्धा । सेवा करो जाय हो प्रार्थी ✣
विप्र जान पुनि आदर कीना । बन वा निकट ग्राम घर दीना
रहो तात नित करिहैं सेवा । पूज्य हमारे तुम हो देवा ✣
आस पास के ग्राम निवासी । बने विप्र के दास अरु दासी
खा २ नाना विध पकवाना । फिर तो कछु का कछू सुभाना
यह तो कथा रही यह ठाई । इतने में धोबिन पुनि आई

विप्रनि वनि कीना यही जाला। लिखो बहुत नहीं बढ़ि है हाला
चलती २ गई उस गामा। जहाँ थे महाराज के धामा।
ग्राम निवासिन कीन विचारा। बन गयो काम भयो उद्धारा।

दोहा

जहाँ मढ़ी है महाराजकी तहाँ बसे यह जाय
खावे पीवे चैन से भजे राम गुण गाय +

चौपाई

हो संजोग दोऊ का नीका। मिटे कष्ट पन सब ही जीका।
अस सुनि समाचार जियभाये। गद २ है मन में हुलसाये।
पंचन मिल कीनो संजोगा। जान अकेला कीन सुजोगा
दिन २ बढ़ो मान बिवहारा। भये बहुत यजमान अपारा
जहाँ २ जाय हो आदर भारी। देखें दान देयें नर नारी +
अबतो बृति बढ़ी इक वारा। कर संक्षेप न कर बिस्तारा
लेन देन बहु तहिं विधि कीना। सूदी ब्याज हेत धन दीना।
भये यजमान बहुत आसामी। नाना गऊ और धन स्वामी
दिन २ भये दोऊ बलवाना। पुत्र भयो उसमन्त्र सुजाना।
जग धर नाम धरा अति नीका। मन प्रसन्न भयो सुनि सबहीका
बालक चतुर देखि चतुराई। कीना प्रेम जान गुरु भाई
अब बालक भयो बियाहन योगा। मिला वियाह में जोगसे जोगा

दोहा

ग्राम निवासिन गुरु को सब विधि कीन सहाय
इतनो धन दीनो सबन दुगिण बियाह से जाय

चौपाई

सुनो कथा जो कन्या बिबाही। माता रंडी, कीन सगाई +
पिता विप्र थे उस के जानो। मिथ्या लेश मात्र नहीं मानो
यही विधि तीनों रहें गुसाई। पढ़ सुनिके पाठक सकुचांई
जग धर नारि दोऊ इकराना। सोये एक ठौर दोऊ ताता +
सोते समय नारि चिल्लानी। गाय २ के तान सियानी +
जगधर भड़ भड़ाय उट्ठे इकबारा। कीना मन में वहुत विचारा
कछु है आज दाल में काला। जो मम नारि कीन असहाला
साम दाम भये देनन लागा। कारण नारि दीन सब रागा
मातामोर (पतुरी) वनिता। ब्राह्मण पिता जान सत्य कन्ता
यही विधि जन्म भयो मम सांई। पति से कपट करूं कछु नाहीं
नारि यथार्त कथा सुनाई। पुनि पहुंचो माता पर जाई॥
परचय लेन चली जब माता। खर्ग निकास लीन इक साथा
कर के क्रोध मातु ढिंग जाई। तजों प्राण नहीं देओ बताई
मन विचार कर कर पछितावा। माने सुत नहीं भाग अभागा
यासे झगर करूं यह ठाऊं। तजे प्राण सुन जो न बताऊं+

धोविन जान जाति अनिहीन॥ वृद्ध समय यह छल रत लीना।
तासे करें बुढ़ापा बेरा + ।कीनो कर्म बहुत हम हेरा+
यही विध पिता हाल सब जाना॥ कर संक्षेप बहुत है गाना।
जगधर भेद सत्य जब पाया।घर तजि तुरत हुई आमन भाया।
छल और कपट भए जग माहीं।भ्रष्ट देह जप कीजे साईं +
हर हर भजो हर्ष नित होई ।हर जन सुनों परम गति होई।

दोहा

माता धोविन पिता के साईं।जोय हुरकिनी पाई
तोरि जनेऊ जगधर नाचे। तीनों की गति पाई

इति

लावनी रंगत वसी करन गो विनय श्री हर हाईनेस श्री १०८
महाराणा उदयपुराधीश वा हर हाईनेस श्री १०८ श्रीम
हाराजा शाहपुराधीश से

(कारी
नृप फत्ते सिंह रंधीर वीर बल कारी।टेक।श्री रामचन्द्र रघुवंश परम उप
श्री रघुराजा महाराज मधुर धुनि वानी॥ करि गो अन हित उपकार मही
गो घेर सिंह ने करी शरि अभिमानी।तब वांण छोड़ नष्ट असुर भय मी
रारी चक्र वर्त्त थो राज जहां जिन कारी
श्री रामचन्द्र रघुवंश परम उपकारी
खानी
हो वीर कोऊ रन्धीर जगत विख्यानी।रघुवीर हरो गम्भीर पीर विल

भये देखि परम उपकार हमारे साती। जो लक्ष जनन से अधिक लाभ
क्या कहूं कोई ना सुने हाल दिलकारी
श्रीरामचन्द्र रघुवंश परम उपकारी

भंजन
श्रीसज्जनसिंह महाराज वीर मन रञ्जन। न्रपमुकट शिरोमणि भरत दीन दुख
एजी सूर्य वंश न पते तेज देखि रघुनन्दन। सखी सोहें राजसमाज नैन बिच अंजन
गो कहें सखी कोऊ पूजन नाहिं पुजारी
श्रीरामचन्द्र रघु वंश परम उपकारी

हीं
सुन उदयपुर के राज बीच डर नाहीं। सुन २ हरजन उपकार हर्ष मन मा
काई
गो रक्षा करी प्रचार जहां हम नाई। एजी धन्य वाद महाराज राज तुम
टेक गउप
सुन विमत कारएक राज बीच भलकारी। श्रीरामचन्द्र रघुवंश परकारी
नी
श्रीनाहरसिंह महाराज काज शुभ कीना। कर २ के धर्म प्रचार जगत जस ली
सुन प्रजाकी पीर हरीं सुख दीना। धन्य २ शुभ राज जहं सुख जीना
टेक री
सखी पूज २ (पाषाण) गई मत मारी। श्रीरामचन्द्र रघुवंश परम उपका

दुज पथरा पूजें छांड़ि गउ सुकमारी। हा आर्य्या वंश के सुनन कष्ट दयो भारी
अरे भूत (प्रेत) अरु मियाँ पुजाय थ्यारी। कर २ विद्या को नाश हरे नर नारि
टेक
गो रक्षा करो प्रचार नागरी जारी। श्रीरामचन्द्र रघुवंश परम उपकारी

गो पुकार रंगत मलार

(विषम)
एक नु मजारी
सुन लार्ड महाशय घोर नरक दुखभारी। टेक॥ नहीं कीने श्रवन क गऊ
है न्याय शील सर्कार अदल विख्याती। जहं सिंह भेड़ इक घाट गऊ बिलखाती

क्या न्याय नहीं अन्याय नहीं यह वाती। जहाँ दुष्ट कसाई पकड़ लात देछाती
टेक सुन लार्ड

एजी बाधक करते घात बात की वाती। चोरी कर काटें हाथ मेरे देहाती
महारानी रानी सुनो जगत विख्याती। लिख भेजो दइया हाय दुख की पाती
सुनलार्ड टेक नहीं

महारानी ने नोटिस किया हिन्द में जारी। है सात सात समुद्र पार जिन्हें दुख भारी
है दीन पशुन की ओर ध्यान जिन कारी। ताहू पर बाधक मारें पेट कटारी
सुनलार्ड टेक नहीं

कर २ बाधक ग्रामन में चोरी ज़ोरी। ससी टीका तिलक लगाय करें सिरफोरी
बाल वच्छ पशु जात देख के भोरी। ठग विद्या कर धरें रूप बहु गोरी
सुनलार्ड महाशय घोर नरक दुख भारी (टेक) नहीं कीने अब तक गऊ एक तुमजारी
कोऊ सुनो लार्ड मम विनय दुख दुखियारी। टक २ विकती हैं निशदिन हाट बजारी
हा देव अब गये कहाँ हमारी वारी। क्या रूई दे लई कान लगाई नारी
टेक सुनलार्ड महाशय

यह गऊ रागनी कहूं चरण शिर नाई। गऊ दान करो न ख़फ़ी फ़नहीं पछिताई
सीता राम धरि ध्यान राम गुण गाई। कर छेदालाल नित्र परम धर्म चित लाई
सुनलार्ड महाशय घोर नरक दुख भारी
नहीं कीने अब तक गऊ एक तुमजारी

लावनी रंगत वसीकरन

गोविलाप

भयेरंडी भडुए अधिक आर्य्याजाती। हा तड़प २ यह काम धेनु विलखाती
घर २ चर्चा करो मेरी नित काल। बन बाओ जहाँ तहाँ कूप बाग अरु ना ना
कर ग्राम २ अरु नगर २ गोशाला। कर कृषी जनन को दुख दूर न दली ती
जबही हुई है अनिपाल गऊ सम भाती। हा तड़प २ यह काम धेनु विल०
मलका को चिट्ठी लिखूं कहो किस भाँती। पर २ कम्पत है गात दुसय भय खा ती
सुन लार्ड रिपन के द्वार विनय पहुंचाती। है दिव नहीं वहलाट जिन्हे समझा ती
धरि ध्यान बीर रन्धीर रैन दिन गाती। हा तडप २ यह०
मेरो लन्दन बीच न कोउ करुणा धारी। हे आर्य्यो वने भी श्रन्य आज दिन सारी
है एक भरोसा हमें वहाँ का भारी। चाहिं सुने रिपन कछु टेर जान दुखभा री
क्या कहूं कहा ना जाय लाज अति आती। हा तड़प २ यह०
यह बाधक अत्याचार करें अति भारी। धरि २ छुपरन पर मास करें व्योपा री
निन कट २ हमरे हाड़ विकत बजारी। है आज काल चहुं ओर ये भ्रष्टाचारी
सखी चाखन विना नीद नहीं आती। हा तड़प २ यह काम०
हैं न्यायशील अंग्रेज़ बिबेकी भारी। जिन स्वार्थ वश हुइ किया न कुछ विचारी
सखी दुग्ध घृत से करें जिन्हें वल कारी। सो कपूत हुइ मारें पेट करा री
जिन चाय हाय ना पड़े चैन दिन राती। हा तड़प २ यह०
गोरक्षा करो प्रचार लेख जारी है। गोदान करो तख़फीफ़ अभी ख री है
सीताराम धरि ध्यान चिमत्कारी है। मिड़ालाल उपकार मोल ...

श्रीकृस गये कहाँ हाय जाय समझाती। हा तड़प २ यह काम०

लावनी गोदान

री है

गोदान करो नरख फ़ीफ़ हानि भारी है। गरदन पर निश दिन छुरी रहत जा

मरी

कर २ पुकार गऊ निश दिन हर कूं टेरी। कोऊ सुनो श्री महाराज बिपति इक

हम कुंजन २ फिरें हरी हर हेरी। सुन नेरे नाम की देयें रैन दिन फेरी +

अरे बाधक दइया हमें मार मारी है। गरदन पर ०

हम दूध दही घृत देयें करें बलवाना। सुनना हू पर नंही करे कोऊ सन्मान।

पी २ जननी को सुधा सार जग जाना। तप कर २ के भये देव ऋषि विद्वान

भेरी जान किसे नहीं जान अजी प्यारी है। गरदन पर निश ०

जो गव्य युक्त गो दुग्ध पियें निन सूझें। सो नारद शेष महेश सरवी री पूजें

होम यज्ञ जप करें पाप सब छीजें। नव पर्मे ब्रह्म जगदीश ईश प्रभु रीझें

गई जब से यारो असल नसल सारी है। गरदन पर जब ०

आर्य्यो वंश हो गये। क्षीन अनि दइया। बल वीर ज पुषार्थ हीन हन भइया

जो पूज्य हमारी काम धेनु है गइया। सो दुष्ट कसाई कब देयें दुख दइया।

सखी हर जन की हर गई जान सारी है। गरदन पर निश दिन छुरी रहत जारी है

गज़ल

अच्छा

गो कुशी ऐ यार है करना नंही अच्छा। दिल जान के अपना सताना नहीं

सग के समान पेट जो भरते हैं मुहब्बा। है रोबरो खुदा के बहाना नंही अच्छा

काम

जो नस्ल में हैं अस्ल वह करते नहीं यह। नालायकों में बाज़ का करना नंही

अच्छा

अय्याश शरीफ़ों को करना नहीं नेवा। त्यागदो मल मूत्र को रखना नहीं ॥ अच्छा
बिस्मिल पड़ी तड़पती हूं कूंचे औ गली में। मज़हब सभी यह हक़ ह ने सताना नहीं अ॰
पैग़म्बर इस बात के शाकी हैं हरदम। सब आयतों से ठीक यह ज़ाना नहीं अच्छा
हरजन न कर दुर्जन से मुहब्बत हो खबरदार। बाईबिल का यही सार बनाना नहीं अ॰

गो नागरी विलाप

सखी गऊ नागरी तड़प रही भारत में। नहीं करे कोउ सन्मान ज्ञान भारत में
हो रही दशा दुर्दशा नशा भारत में। क्या आर्य्य वंश हो गये लोप भारत में
श्री दयानंद आनन्द वंधु भारत में। किये हरिश्चन्द्र सन्मान महा भारत में
परम सखा नृप सज्जन सिंह भारत में। गये किते महाशय छोड़ २ भारत में
हम तड़प २ बिलखात नात भारत में। जैसे जल बिन नलफत मीन हीन भार॰
पर
दुख दे दुख दे गये आय हाय भारत में। नहीं रहे वीर रन्धीर कोई भारत में
है (?) दूधक ज़ोर पुर शोर ओर भारत में। क्या भये सभी निर्दई चई भारत में
नित स्वार्थ परता छाय रही भारत में। हा रांड़ पिशाचिन लियो मोह भारत में
कर कपट ईर्षा भाव लाभ भारत में। सखी बैठ २ बाज़ार हाट भारत में
ज्ञा पत्र आर्य्य किये नष्ट भारत में। चल २ के चाल कुचाल जाल भारत में
लिया मोह सदा दिलला के भुला भारत में। अरु लैला मजनूं किया गज़ब भारत में
मीर हसन मसनवी आदि भारत में। पढ़ २ अरबी औ तुरक बोल भारत में
कर २ उर्दू प्रचार जार भारत में। सो सब बिधि फल पाय २ भारत में
उर्दू के अक्षर बीच आल भारत में। है आज काल दरबार चाल भारत में

गये आये लार्ड अनेक नेक भारत में। नहीं हुआ न्याय अन्याय रहा भारत में
करी घात विश्वास बडी भारत में। सो उवल्यू हंटर सुनो मित्र भारत में।
सत युग त्रेता सुनो सखी भारत में। द्वापर परमानंद कियो भारत में
विक्रम राज कुमार समय भारत में। नाना विधि आदर भया मेरा भारत में
ले लई धरा। कचनी धनी भारत में। अफसोस करे का होत सोच भारत में
भग ध्यान गुरू काजे बोलो भारत में। होगऊ नागरी अटल राज भारत में
हो प्र भान अज्ञान मिटे भारत में। सो कहूं छदामी लाल हाल भारत में

हे न्याय शील सरकार परम हित कारी। हर हरो नागरी दुःख दीन दुखियारी
गुजरात देश कर कर सिंहार गुजराती। सो राज काज दरबार देखि जिये भाती
सुन सन उर्दू के वचन धडकती छाती। ह्यासे तन भई ये आय हमारी साती *
कोऊ हरो पीर गम्भीर जखम है कारी। हर हरो *
मेरी परम सुन्दरी सखी मेरे ठी प्यारी। हे पूना मुंबई आदि नगर में जारी
जहां सत्य धर्म मर्याद नीक प्रचारी। नहीं कपट जाल जंजाल बने हरवारी
पढ़ बालक हो चतुर परम उपकारी। हर हरो नागरी *
सखी मरहास सन्मान मेरा भारी है। वहू देश भरत में राज अटल जारी है
इक पूर्व पश्चिम अवध देश सवारी है। छल बल से उर्दू करे छेड छाडी है *
मैं दीन हीन तन छीन देखि सुकुमारी। हर हरो नागरी *
बंगाल देश में राज करे बंगाली। हे उ... हम में चतुर सखी मैं पाली

मर २ समाज तजि लाज करो संग आली। नहीं समभत वान गमार भरे सा जाली
मेरी जन्म भूमि ली छीन दीन दुखभारी। हर हरो नागरी ०
सखी दुन्दर कर अन्याय औ अत्याचारी। जो छाछ दूध का किया न नेक वि चारी
भुक उर्दू को करो सलाम मिल सारी। आज काल जो भई बड़ी दुखारी।
ये हिन्दी करती विनय खड़ी हरखारी। हर हरो ०
ब्रज भाषा मेरा नाम जान सखियनमें। नित करूं सत्य विस्तार मधुर वनिय नमें
दिनरैन करो प्रचार पत्र पतियनमें। दिखलाओ लन्दन द्वार र नरानयनमें
कहें छेदालाल कर विनय और सिष्टाचारी ०
हर हरो नागरी दुख दीन दुखियारी ०

लावनी रंगत वसीकरन
देवनागरी निराशा

सखी उर्दू बीवी करी देश की ख्वारी। हा करूं क्या अफ़सोस विपत की मारी
(१)
यह चंचल छल बल करे लाज ना आनी। नस २ में जाके कपट भरा हर बानी
है नारि चतुर चालाक मेन नाभाती। हा दिये पिशाचिन दुःख हमें बहु भांती
उन्नति हिन्दी करो सकल नर नारी ०
हा करूं क्या अफ़सोस विपत की मारी
(२)
जर २ समाज दुख दूर करो मन भाई। उर्दू के दफ़्तर बीच जाल रहो छाई
ऐसे यह नारि पनारि हमें ना भाई। कहि सकें न उर्दू बीच हाल सब गाई
उर्दू के छल बल करो सकल ब्रजनारी

हा करूँ कहा अफ़सोस बिपत की मारी
या उर्दू कहती सुनो मित्र चितलाई। हैं और मेरी नितलाला लोगसहाई
अअसर आला छबि देखि ललचाई। बाबू हैं लट्टू निरख मनोहर नाई अ
सखी मोह बिबस हंटरने कीनी ख़्वारी
हा करूँ कहा अफ़सोस बिपत की मारी
भारत जननी के सुतन कीन अनिहानी। दई लात मार निकसाय निपट अभिमानी
चोंधे कड़ोर मन पुत्र प्राण याठानी। सुनि हैं हन्टर कछु बिनय लेउ अगमीं
तिन करी घात विश्वासगई मम मारी ।
हा करूँ कहा अफ़सोस विपत की मारी
सखी कहे नागरी बिनय मेरी भारी है। औगुण उर्दू में भरे सभे प्यारी है +
सीताराम धरि ध्यान मदद जारी है। हरजन की छेदालाल चाल न्यारी है
मलका महारानी सुनो परम पिया प्यारी
हा करूँ क्या अफ़सोस विपत की मारी ।

उर्दू अक्षरों से हानि

जिन शब्दों के ऊपर आड़ी लकीर खिची है वे उर्दू फ़ारसी और ह रीमें एक ही से लिखे पढ़े जाते हैं जिस से सर्कार और प्रजा दोनों की बड़ी हानि होती रही है ॥

टेक तुम लिखो न उर्दू पत्र मित्र पछिताओगे
हर्फ़ २ में देख फ़र्क़ चित लाओगे। यह उर्दू रवती नये जाल चाला की आदि खलाओगे

तुम लिखो न उर्दू पत्र मित्र पछिताओगे

हेर फेर अंधेर कहां लग गाओगे। जाल चाल का हाल देख दुख पाओगे भ

तुम लिखो न उर्दू पत्र मित्र पछिताओगे।

परम हरम औ नरम को क्या बतलाओगे जब न्याय शील सर्कार के सन्मुख जाओगे

तुम लिखो न उर्दू पत्र मित्र पछिताओगे।

लिखो किमिलियां पढ़ो कसबियां पाओगे। हाल बहाल बिहाल का क्या समझोगे

तुम लिखो न उर्दू पत्र मित्र पछिताओगे

जीम जन्म पढ़ सनम लोग हूं सवाओगे। जब भूल फूल मक बूल यार को पाओगे

तुम लिखो न उर्दू पत्र मित्र पछिताओगे।

दीवान को पढ़ के देवलोक घबराओगे। तब नार यार को भेज तसल्ली पाओगे

तुम लिखो न उर्दू पत्र मित्र पछिताओगे

नाम गाम ना ठाम ठीक पढ़ पढ़ओगे। बिना मदद दो चार सार ना पाओगे

तुम लिखो न उर्दू पत्र मित्र पछिताओगे

कहे देवनागरी सुनो परम पद पाओगे। करु छेदालाल सन्मान महा फल पाओगे

देवनागरी की पुकार श्रीमान महोदय लार्ड रिपन से

लार्ड रिपन जै बोल कि भइया दुल्म कसम। करी है बेड़ा पार कि भइया दुल्म सम

लार्ड रिपन बलने जव कि भइया दुल्म कसम। मिरे दुख अरु खेद कि भइया दुल

भरत देश आनन्द कि भइया दुल्म कसम। जै जै परमानन्द कि० ०

गोरक्षा करो प्रचार कि० । यही सत युगी सार कि०
रहो एक वस खेद कि भइया० । बिन हिन्दी दरबार कि भइया०
करो युक्त वह यार कि भइया० । चले न हिन्दी वार कि भइया०
मज़ा लुत्फ़ उठ जाय कि भइया० । बिन उर्दू दिलदार कि भइया०
भरन देश बर्बाद कि भइया० । दशा देख फ़रहाद कि भइया०
लैला मजनूं ख़्वार कि भइया० । और मसनवी सार कि भइया०
बालक पढ़ ख़्वार कि भइया० । भोगत दुःख अपार कि भइया०
होत न उर्दू ज्ञान कि भइया० । वर्ष आठ अनुमान कि भइया०
अलिफ़ इए और एन कि० । से स्वाद अरु सीन कि भइया०
ज़े ज़्वाद और ज़ो कि भइया० । होत बाल नहीं बोध कि भइया०
ते तो मेरी जान कि भइया० । क़ाफ़ काफ़ ली जान कि भइया०
पढ़ो एक ही भाँति कि भइया० । जाल चाल अरु हाल कि भइया०
अब हिन्दी में जान कि भइया० । पढ़त होत विद्वान कि भइया०
पढ़े मास छः सात कि भइया० । करत पत्र व्यवहार कि भइया०
भरत देश हर बात से कि भइया० । दिन २ छीजत जात कि भइया०
देशोन्नति नहीं होय कि भइया० । बिन भाषा प्रचार कि भइया०
[म]गध देश इत्यादि कि भइया० । करे हिन्दवी बास कि भइया०
[हि]न्दी करे पुकार कि भइया० । सो इङ्गलिश दरबार कि भइया०
[तो] डाक्टर विनय कि भइया० । डबल्यू हन्टर तुमहिं कि भइया०

छांडो चाल कुचाल कि भइया। जान लार्ड कृपालु कि भइया।
बढ़े लार्ड प्रताप कि भइया। सो ईश्वर प्रताप कि भइया।
तजो शोक सन्ताप कि भइया। करो विनय हरखान कि॰
बार २ हर बार कि भइया। हर जन करत पुकार कि॰

ग़ज़ल उर्दू पढ़ने से हानि

फसते हैं जाल बीच सनम किस अदा के साथ ❈
पढ़ २ के फ़ारसी हुये बरबाद उन के साथ ❈
तिफ़ली में मुझे होय न था जोश यार में ❈
बदला हुआ था ख़ून घटा दिल रुचा के साथ ❈
ले ले कि साथ बहुत से दीवान मसनवी ❈
छिरका नमक है घाव पै जो रोज़ जफ़ा के साथ ❈
बरसों सनम के साथ पढ़ी दिल से फ़ारसी ❈
लेकन भला हुआ न हुआ इस बला के साथ
है दोस्तों से आरज़ू भागो बचो अज़ीज़ ❈
लेती यह जान दे रखो पूरी री अदा के साथ ❈
होती बड़ी हैं ख़्वारियाँ इस के रवाज से ❈
प्रचार करो नागरी दिलावरी के साथ ❈
यह नागरी गुण आगरी है सार गुनों का ❈
रस खैंच ले तू हर जन जा बेल फलों के साथ ❈

ग़ज़ल २

इक फ़ारसी के ज़ोम में उर्दू खड़ी खड़ी
करती थी छेड़ छाड़ियों हमसे खड़ी खड़ी
आते थे बहुत यार जो हिन्दी की उसक में
सरे बाज़ार लगी बाम से वकने खड़ी खड़ी
कीजो ज़रा इधर भी नज़र आँख उठा उठा
जपती वसी करन थी मंतर खड़ी खड़ी ॥
यारों ने जब कि हंस दिया ये सुन के उस घड़ी
सक्ते में रही देखि के बुत सी खड़ी खड़ी ॥
हिन्दी में वस्फ़ देख मेरी जाँ लड़ी लड़ी ॥
मोती झड़ें सखीरी मुख से घड़ी घड़ी ॥
उर्दू पढ़ो न यारो सुनलो ज़रा अजी ॥
करती है मिंडा लाल ये दिक़ क्यों खड़ी २

हमारे देशी भाईयों का वेश्या नाच देखना और उसका धिक्कारना

किसी कबि ने कहा है

परि पूरण पाप के कारण से भगवंत कथा न रुचि जिनको
तिन इक इक नारि बुलाय लई नचवावत हैं दिन को रिन को
मृदंग कहे धिक है २ मंजीर कहे किन को किन को ॥

तब हाथ उठाय के नारि कहे इन को ३
देखो जो कि नैन देखने हैं उन्हीं को बदनाम करती हैं॥

उर्दू अक्षरों से हानि

सन १८८४ का वृत्तान्त है कि ग्रन्थ करता स्टेशन आबू से बदल कर अजमेर में आया। वहाँ अपने मित्र बाबू श्याम सुन्दर लाल गुप्त से मिलने को गया। जब उन के मकान पर पहुंचा। तब सुना कि बाबू साहब श्री महाराजा झालरा पाटन के यहाँ दीवान- (प्राईवेट सेक्रेटरी) होगये हैं इस बात के सुन ने से अति आनन्द भया। उस के दूसरे दिवस एक पोष्ट कार्ड खुशी का अपने भतीजे बाबू चुन्नीलाल गार्ड स्टेशन नाना। (राज पूताना राज जोधपुर) को लिखा। कि अमुक बाबू साहब अजमेर से बदल कर महाराज झालरा पाटन के यहां दीवान के पद पर नियत किये गये हैं इस आनन्द का वृत्तान्त सुन उसने एक पत्र उर्दू में घर (का[illegible]गंज) को भेजा कि अमुक महाशय अजमेर से बदल कर झालरा पाटन के महाराज के यहाँ दीवान [illegible] गये हैं वह पत्र दो विद्यार्थियों ने चिट्ठी वा[illegible] [illegible]र पीपूनांभपढ़

(जो कि एक में फ़ारसी और अङ्गरेज़ी में एन्ट्रेन्स औ
र दूसरे ने ज़ुबान देशी में पास किया था) दीवान
को देवलोक पढ़ शीघ्रही उन के मामा से कहा
कि आप का कोई रिश्तेदार अजमेर था सो उन
का महाराज झालरा पाटन के यहाँ देवलोक हो
गया यह सुन कर रोना पीटना घर में पड़ गया
फिर उन के मामा मेरे पिता के पास उस पत्र का
तत्व लेने आये और कहा कि तुम्हारे लड़के के
पास से कैसा ख़त (चिट्ठी) आया है लाओ हम
भी उसे पढ़ा कर देखें तब मेरे पिता ने कहा कि
आपके भाँजे साहब अमुक महाराज के यहाँ दी
वान होगये हैं तब उन्होंने कहा नहीं २ तुम बात
बनाते हो वह ख़त दिखाओ जो अभी आया है उ
न को चार पाँच पत्र उस मास के दिखाये परन्तु
इन का सन्देह नहीं मिटा (यदि नागरी में लिखा
होता तो आप सन् - मिटा लेते) और कहा कि
ादि तुम ठीक नहीं बताते हो तो परस्पर जो बाप
ादों से मित्रता चली आती थी उस में अंतर प
ागया । तब सेष भ गंज (जिलअ फ़र्रुख़

वाद) पर आकर (XP) बहुत ज़रूरी ७) रुपये का जबाबी तार भेजी कि अपने सुसमाचारों से शीघ्र ख़बर दीजिये तब जवाब में आया हम बाल बच्चों सहित अति प्रसन्न हैं परन्तु ग्रन्थ करता के पिता की तरफ़ से उन को सन्देह ही रहा जब कि मैं अजमेर से नोकरी छोड़ कर कायमगंज आया तब यह सब वृत्तान्त भली भाँत ज्ञात हुआ तब उन को सेवक ने उन के हृदय का मैल दूर किया और जो कुछ बुराई आपुस में हो गई थी बहुत से दृष्टान्तों से जैसे किश्तियाँ कसबियाँ फिकवा दो फुकवादो से दूर कीं और उर्दू अक्षरों का ही सब क़सूर पाया गया। यह वृत्तान्त बहुत संक्षेप से लिखा गया नहीं तो एक पुस्तक इसी की बन जाती ॥

(२) इस ग्रन्थ करता के भती[illegible] को किसी हकीम (वैद्य) ने एक तोले सिंघि[illegible]ा और कई ओर भी ओषधीं खाने को बत[illegible]ई थीं जब वह नुसख़ा जो कि उर्दू अक्षरों [illegible] [illegible]था पनसारी

सिंघिया (سنگیا) की जगह संखिया (سنکیا) एक तोले रिवाजी शब्द मतलब से पढ़ कर बांध दिया नुसख़ा बाँध चुकने के पीछे उसने पूछा कि यह दवा लगाओगे वा खाओगे तब उत्तर दिया कि हकीम ने यह दवा खाने को बताई है तब पंसारी ने कहा यह दवा खाने के लिये न होगी इस दवा के खाते ही मनुष्य मरजायगा फिर के इस को साफ़ २ नागरी अक्षरों में लिखलाओ तब सिंघिया जो एक प्रकार का सींघ होता है संखिया को निकाल कर फेर से नुसख़ा बांधा- उर्दू बीबी जो न करे सो थोड़ा है ॥

(३) मेरा लघु भ्राता छदम्मी लाल (केनल डिपार्ट मेन्ट से) उर्दू से दुखित हो लिखता है कि नहर के महकमे में भी उर्दू की पैनी छुरी से किसानों की ख़ूब गरदन काटी जाती है सो यह है कि १ . किसान पदमी बल्द गनेशा के नाम पानी की सिंचाई चाहिये थी से मतलब से मुरली बल्द गनेशा पढ़ कर उस से दाम दा ल कर लिये मुरली बल्द

गनेश ने डर के कारण सिन्चाई के सबअ
दाक (Assistant Engineer) असिसटंट इ
नजिनियर मियाँ भाई को अर्ज़ी दी असुक ज.
नाव ने वह अर्ज़ी पढ़ कर फेंक दी शायद यह वि
चार किया हो कि इस में हमारी उर्दू बीबी की
इस में बदनामी होगी और बिचारे किसानों
को सिपाहियों से धक्के लगवा निकाल दिया
बस ॥

इति

पाठकों से बिनय

बहुत जन देखि कबिता मेरी हंसते ।
महाशयों से नमस्ते है नमस्ते ।
अगर कोई लेख नाजेवा लिखा हो ।
इनायत से खता माफ़ी अता हो ।
नहीं मुझ को तमीज़ है ग़लतियों की ।
कि हूं मैं मुबतदी थोड़े दिनों का ।
नहीं सेवक को ग़लती से है कुछ काम
किया चाहे गऊ क़िस्से को अंजाम ।
मुझे है प्रेम भाषा नागरी से ॥
मुहब्बत दिल से है गुण आगरी से
हज़ारों गुण गणों की खान है यह ।
ये सब विद्यायों की जड़ जान है यह
करो दिल जाँ से जारी इस को यारो ॥
सो घर घर मे करो चरचा प्रचारो ॥
सुन हर जन ाक चुका बक २ न कर तू
क़लम बस है जा चलने से अब तू

आर्यों का एक शुभ चिन्तक
छेदालाल क्लर्क
कानपुर अचनेरा रेल स्टेशन कायमगंज
मारफ़त सीताराम हीरा मणि महता

पुस्तग प्रीं रामजनं